

बस, एक आदेश का इंतज़ार...!!

मनुष्य के जीवन में मन का बहुत ही महत्व है, और जब हम मन की बात करते हैं तो उसे दो कैटेगरी में बाँटते हैं। एक है जागृत मन(कॉन्शियस माइंड), दूसरा अर्धजागृत मन(सब कॉन्शियस माइंड)। जागृत अवस्था में जो भी हम रोज़मर्रा के जीवन में कार्य करते हैं, निर्णय लेते हैं, देखते हैं, उन सबको हम जागृत मन कह सकते हैं।

आज हम, अर्धजागृत मन कैसे कार्य करता है, उसकी शक्तियाँ क्या हैं, उसके बारे में जानेंगे। हमारा अर्धजागृत मन अत्यधिक उपजाऊ



- ब्र. कु. गंगाधर

भूमि जैसा है, और जो बीज मिलता है उसे वह उगाता है। बीज आम का हो या बबूल का, ये देखने का काम ज़मीन का नहीं है। वह तो केवल उगाना ही जानती है। सप्ताह में सोमवार से शनिवार तक बबूल की बोहनी करना और रविवार को भगवान के मंदिर में आम की मांग करना, कोई समझदारी नहीं है ना! अपने सर्वोच्च विकास के लिए आवश्यक

सभी साधन और सामग्री हमारे अंदर ही रख दी गई है। कई लोग इन शक्तियों को पहचान लेते हैं, और कुछ आजीवन भी नहीं पहचान पाते। जो लोग इन शक्तियों को पहचान लेते हैं, वे गरीब परिवार में गुज़र-बसर करने के बाद भी खूब उन्नति करते हैं। जो इन शक्तियों को पहचान नहीं पाते, वे अमीर परिवार में पलने-बढ़ने के बाद भी जिन्दगी में कोई विशेष कार्य नहीं कर पाते या नहीं कर सकते। अपनी प्रगति का आधार, अपने आसपास क्या है, उसपर नहीं है। अपितु हमारे अंदर क्या है, इसपर आधारित है।

परमात्मा ने हमें जब रचा तो बहुत ही अनोखा, और अद्भुत शक्तियों से सुसज्जित करके इस धरा पर भेजा। जिसे हम आत्मा कहते हैं। आत्मा में वो शक्तियाँ दीं जो किसी भी प्राणी में नहीं। जो अभिव्यक्त होना चाहता है, अंतर्मन में रहने वाला एक दिव्य तत्व, सम्पूर्ण रूप से व्यक्त होने की इच्छा रखता है। अपने अज्ञान के कारण उसकी अभिव्यक्ति रुक जाये, यह किसी भी प्रकार से ठीक नहीं है।

भूतकाल चाहे जिस तरह का गुज़रा हो, लेकिन आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण है 'आज की आज'। आज के पेट में ही भविष्य का गर्भ आकार लेता है। जब आप कोई विज़ुअलाइज़ेशन (दृश्यांकन) करते हो, तब भविष्य के गर्भ को 'आज' स्थापित कर रहे होते हो। बाद में उसका भविष्य आकार लेकर ही रहता है।

आज तक विज़ुअलाइज़ेशन की जो जानकारीयाँ आपको दी गई हैं, उसका आपको महत्व समझ में आ गया होगा। संजोगों के सृजन का समर्थन धारी आपका अर्धजागृत मन आपके आदेश की इच्छा रखता है। ये आपके लिए श्रेष्ठतम जिन्दगी का सृजन कर सकता है। किंतु आवश्यकता है इसे स्पष्ट आदेश देने की, और इसे आदेश देने की भाषा है 'विज़ुअलाइज़ेशन'। जब जामवंत ने हनुमान को कहा कि तुम हवा में उड़ सकते हो और सागर पार कर सकते हो, तो जैसे ही उसे यह आदेश मिला, उसमें वह शक्तियाँ जागृत हो गईं और उन शक्तियों के प्रतिफल वह सागर पार कर गया। यह बातें हमने सुनी हुई हैं ना। विज़ुअलाइज़ेशन अर्थात् आपको जैसे संजोग चाहिए, वैसे ही संजोग चल रहे हों, ऐसा विज़ुअलाइज़ेशन।

विज़ुअलाइज़ेशन की तकनीक का उपयोग कहाँ और कब किया जा सकता है?

विज़ुअलाइज़ेशन की तकनीक का उपयोग करने के लिए आपके पास दो विकल्प हैं - एक तो, समस्या से बाहर निकलने के लिए। दूसरा, सुखी जीवन को और अधिक सुखी बनाने के लिए। आइये इस विषय पर विस्तार से देखें...

समस्याओं से बाहर निकलने के लिए - रोज़ाना ही उठापटक की छोटी-बड़ी दोनों तरह की समस्याएँ आती रहती हैं। इनमें से बाहर निकलने के लिए आप विज़ुअलाइज़ेशन कर सकते हैं। ये समस्याएँ किस प्रकार की होती हैं यह जान लें, जिससे आपको प्रत्येक का विस्तृत रूप से ध्यान आये।

- ब्लड प्रेशर घटता-बढ़ता रहता है, नॉर्मल नहीं रहता।

- मेरे पति मुझे बात-बात में डाँटने लगते हैं।

- मैं अपने ग्राहक को बराबर समझा नहीं सकता।

- मुझे अच्छे अंक चाहिए, किन्तु पढ़ने में रुचि नहीं है।

- उधारी के रुपये वापस नहीं मिलते।

- मधुमेह(डायबिटीज़) नियंत्रण में नहीं आता।

- शेष पेज 4 पर...

स्वमान में रहो तो कोई अपमान कर नहीं सकता

अभी सभी का मन कहाँ था! मन शान्त है तो बुद्धि क्या सोचे? मैं हमेशा यह अनुभव करती हूँ कि यहाँ है बाबा, यहाँ है मेरा भाग्य। साक्षी होकर के देखने का, पार्ट प्ले करने का भी भाग्य है। हमारा रचता कौन है, कितनी सुन्दर उसकी रचना है। हरेक कहेंगे बाबा मेरा, बाबा कहता है तू मेरा। मैं कहूँगी बाबा तू मेरा, अभी यह जो लाइफ है ना, वो सारे कल्प में नहीं मिलेगी। मरना जीना सब जन्मों में होगा, परन्तु अभी यह जो हमारा जीते जी मरना है ना, यह वन्दरफुल है। यहाँ सभी समझदार और सयाने बैठे हैं, इसलिए याद में बैठते और कोई बात याद आ नहीं सकती।

आज तीसरे रविवार का इंटरनेशनल योग दिवस है, मैं नहीं समझती हूँ मैंने कभी मिस किया हो। कोई भी शहर में होंगी, कहाँ भी होंगी, प्लेन में भी होंगी या कभी एयरपोर्ट पर भी एक घण्टा बैठके भी थर्ड सण्डे का योग किया है। तो आप में से कोई ऐसा है जिसने कभी मिस नहीं किया हो? दूसरी बात, चारों सबजेक्ट में फुल मार्क्स लेनी है।

कौन है जिसको यह फिकर है? यह फिकर माना नियम पर नियमित चलना, जो बाबा ने अमृतवेले से नियम बनाके दिया है, उसपर

चलते चलें। नुमाशाम का और थर्ड सण्डे का जो नियम है यह भी बहुत ज़रूरी है, बहुत अच्छा लगता है। इसे मिस नहीं करना चाहिए। ट्रैफिक कंट्रोल के गीत भी कितने अच्छे हैं। तो सभी ट्रैफिक कंट्रोल के गीत पर योग करने के नियम पर चलते हो? ऐसे छोटे-छोटे नियम, मर्यादाओं पर चलने से हम बाबा को मुँह दिखा सकते हैं। टाइम पर चलना बहुत अच्छा है।

अपने स्वमान में रहने से बहुत अच्छा लगता है। कोई मेरा अपमान नहीं करता है, भले करता भी हो पर फिर भी स्वमान में रहने से बहुत अच्छी तरह से अन्दर में बल मिलता है। बाकी सब नशे से सभी नुकसान, लेकिन यह जो नशा चढ़ा हुआ है इससे बहुत फायदे हैं। अभी यहाँ से परमधाम में जाना है, सुखधाम में आना है। दिन भर में यह कितनी बारी याद रहता है? तो संगम पर हम त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों में यहाँ निमित्त मात्र हैं क्योंकि संगम युग त्याग, तपस्या और सेवा के लिये है। तो देखना है मेरी त्याग वृत्ति, तपस्वी मूर्त है? कदम कदम पर सेवा हो। हमारी पढ़ाई वन्दरफुल है क्योंकि हमारी पढ़ाई में ही कमाई है। बहुत अच्छी अच्छी बातें अभी भी हर रोज़ बाबा मुरली में सिखाता है।

आज एक ने पूछा कि सकाश क्या है? कैसे मिलती है? कैसे देना होता है? सकाश हम बाबा से खँच रहे हैं, विश्व



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

को दे रहे हैं। हमारे आपसी सम्बन्धों में सकाश की लेन-देन है। संगमयुग पर जो भाई बहनें हैं अभी हम हज़ारों लाखों हो गये हैं। बाबा अव्यक्त होकर के कितनी सेवायें कर और करा रहा है, किसकी सकाश काम कर रही है? बाबा की ना! उसी सकाश से बाबा सबको यहाँ खँच करके हाज़िर कर देता है। सकाश एक पॉवर है, लेकिन ज़रा भी कमज़ोरी है, कोई किसी स्वभाव के वश हैं, तो सकाश ले वा दे नहीं सकते हैं। तो हर एक के स्वभाव को समझना और उसी अनुसार चलना, यह मुश्किल नहीं है, लेकिन थोड़ा मुश्किल लगता है। आजकल और कोई माया नहीं है पर थोड़ा किसी का स्वभाव.. सहन नहीं होता है। इसमें सहनशक्ति, समाने की शक्ति, समेटने की शक्ति आपेही काम करती है। कभी मैंने यह नहीं कहा होगा कि यह मेरे से सहन नहीं होता है। हमारे में इतनी कमज़ोरी नहीं हो।



दादी हृदयमोहिनी अति.मुख्य प्रशासिका

संगठन में कमज़ोरी वालों को नहीं उमंग वालों को देखो

धार्मिक स्थानों पर दूसरी बात होती है लेकिन यहाँ परिवार और स्कूल दोनों है। जब क्लास में होते हैं तो स्कूल लगता है और जब एक साथ खाते पीते हैं तो घर लगता है। यहाँ दोनों भासना आती है। भगवान सहज बाप के रूप में मिल जायेगा, कम बात नहीं है। वह हमें ऐसे मिला है जैसे हमारा ही था। बाबा ने हमें इतने बड़े संगठन में चलने की शिक्षा दी है। संगठन में थोड़ा बहुत चलता है लेकिन संगठन अच्छा है। यहाँ जितना ज्ञान योग और धारणाओं पर ध्यान खिचवाया जाता है और कहीं शायद इतना नहीं होता। सदा खुशनुम: रहना है, बातों से नहीं डरना। संगठन में बातें तो आयेंगी लेकिन हमारा ध्यान बाबा और पढ़ाई पर हो तो यह बातें कुछ भी नहीं लगेगी। संस्कारों के मिलन में ऐसा होता है। हमने तो बाबा से छोटेपन में आप जैसी पालना पाई है लेकिन आप तो बड़े भी ऐसी पालना के पात्र हो।

प्रश्न:- दादी जी, हमारे ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन पढ़ाई है। सदा पढ़ाई पर हमारा ध्यान रहे इसके लिए क्या करें?

उत्तर:- जो हमारे चारो सब्जेक्ट हैं उन पर विशेष ध्यान रहे। जब हम शुरू-शुरू में

बाबा का बनते हैं तो बाबा और पढ़ाई पर बहुत ध्यान रहता है, बहुत उमंग-उत्साह रहता है लेकिन धीरे-धीरे माया अपना रूप दिखाती है। पहले नशे में रहते हैं और पेपर के टाइम सोचते हैं क्या होगा, कैसे होगा। अगर हम बाबा की बनाई हुई दिनचर्या पर ध्यान दें तो सब ठीक हो जाता है। अगर हमारी दिनचर्या ठीक है तो हमारे जैसी खुशी और किसी को नहीं होगी। सुबह-सुबह मुरली सुनकर सारा दिन उसका अनुभव करें। मुरली और योग मिस नहीं करो। क्लास में सिर्फ प्रेजेन्ट के लिए नहीं बैठना लेकिन मन से भी प्रेजेन्ट रहना है। संग से अपनी सम्भाल करनी है। हमें भगवान मिला है, यही नशा और खुशी हो।

प्रश्न:- दादी जी, परचितन से मुक्त कैसे बनें?

उत्तर:- जब भी समय मिले बीच-बीच में मुरली का मंथन करो। परचितन से कोई भी फायदा नहीं और प्राप्ति भी नहीं। संगठन में परचितन चल सकता है लेकिन चलना नहीं चाहिए। पढ़ाई पर ध्यान देंगे तो सेफ रहेंगे। सारा दिन सेवा तो करते हैं लेकिन अपनी रीति अपनी प्रोग्रेस के लिए मन और बुद्धि का टाइमटेबल बनाओ। रोज़ सवेरे सोचो आज मुझे नया क्या करना है। आज कर्म और बोल में क्या नवीनता होगी! मन की दिनचर्या स्वयं बनाओ इसमें हल्के नहीं बने। अपनी उन्नति के लिए मन का प्रोग्राम

बनाओ। अपनी कमज़ोरी को जान अपने मन की दिनचर्या बनाओ। मन किसी भी बात में फेल न हो, सब बात में विजयी हो।

प्रश्न:- दादी जी, चलते-चलते ईर्ष्या और रीस उत्पन्न हो जाती है, क्या यह ठीक है?

उत्तर:- संगठन में ईर्ष्या और रीस होगी, लेकिन इससे कोई फायदा नहीं और ही नुकसान है। ईर्ष्या की आदत पड़ गई तो निकलने में समय लगता है। हमारी नज़र बहनों पर नहीं मम्मा बाबा पर जाये। बहनों को देखेंगे तो कमी नज़र आयेगी। हमें संगठन मिला है एक दो के उमंग से आगे बढ़ने के लिए, ईर्ष्या करने के लिए नहीं। अपने ऊपर ध्यान दो मुझे क्या करना है। कमज़ोरी वालों को नहीं देखो, उमंग वालों को देखो।

प्रश्न:- दादी जी, हिसाब-किताब बन रहा है या चुक्त्तू हो रहा है उसकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:- अगर चुक्त्तू हो रहा है तो सन्तुष्टता और हल्कापन फील होगा, भारीपन नहीं लगेगा।

प्रश्न:- दादी जी, सेवा का लक्ष्य क्या है? उत्तर:- सबको बाबा का परिचय देकर बाबा का बनाना, सिर्फ कनेक्शन में लाना नहीं। उनको बाबा का बनाकर उनकी पीठ करनी है, उमंग-उत्साह में लाना है, बीच में छोड़ नहीं देना है।